# डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय)**

# ख़बरों में विश्वविद्यालय

## फरवरी 2023

# संवेदनशील मनुष्य बनने में किताबों की अहम भूमिकाः कुलपति

## विश्वविद्यालय में 3 दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ

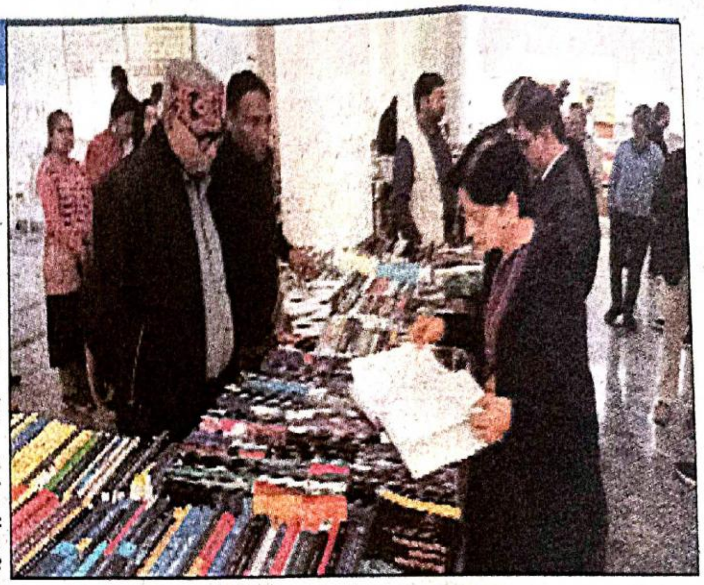

सागर, देशबन्धु। डॉ.हरीसिंह गौर विवि में आचार्य शंकर भवन में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रातः 10.30 बजे विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पुस्तकें व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। किताबों के बिना मनुष्य अधूरा है। एक संवेदनशील नागरिक के निर्माण में किताबों की अहम् भूमिका है। संवेदनशील और जागरूक मनुष्य ही बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने पुस्तक प्रदर्शनी के प्रत्येक स्टाल का निरीक्षण भी किया। उद्घाटन के अवसर विवि के प्रो. आरके त्रिवेदी, पुस्तकालयाध्यक्ष प्रो. उमेश पाटिल, प्रो. सुबोध जैन, प्रो. जीएल पुणताम्बेकर, डॉ. संजीव जैन, डॉ. मुकेश साहू, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। उदघाटन के पश्चात विवि के विभिन्न विभागों के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने विभिन्न स्टालों पर जाकर पुस्तकों का अवलोकन किया एवं अपने पसंद एवं विषय क्षेत्र की पुस्तकें चुनी। प्रो. उमेश पाटिल एवं डॉ. उमेश साहू ने बताया कि पुस्तक प्रदर्शनी में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों में खासा उत्साह है। लम्बे अंतराल बाद उन्हें एक ही परिसर में ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों की पुस्तकें अपनी रूचि से चुनने का अवसर मिल रहा है। विद्यार्थी, शोधार्थी एवं शिक्षक उपयोगी पुस्तकों का चयन कर रहे हैं ताकि उनकी पुस्तके में उपलब्धता भी सुनिश्चित हो सके और इसका लाभ मिल सके। कई विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों ने प्रदर्शनी से पुस्तकें खरीदी भीं। इस आयोजन में शहर के विद्वतजन एवं अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के लोग भी आ रहे हैं और अपनी पसंद की पुस्तकें चुन रहे हैं। पुस्तक प्रदर्शनी में देश विदेश के महत्तवपूर्ण प्रकाशकों की पुस्तकों के साथ-साथ विश्वविद्यालय द्वारा सूचीबद्ध पुस्तक प्रदाता फर्मों द्वारा विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही है।

# विवि में त्रिदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ

नवभारत न्यूज

**सागर 1 फरवरी. डॉ. हरीसिंह गौर विवि में आचार्य शंकर भवन में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने किया.**

उन्होंने कहा कि पुस्तकें व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र होती हैं. किताबों के बिना मनुष्य अधूरा है. एक संवेदनशील नागरिक के निर्माण में किताबों की अहम् भूमिका है. संवेदनशील और जागरूक मनुष्य ही बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं. उन्होंने पुस्तक प्रदर्शनी के प्रत्येक स्टाल का निरीक्षण भी किया. उदघाटन के पश्चात विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने विभिन्न स्टालों पर जाकर पुस्तकों का अवलोकन किया एवं अपने पसंद एवं विषय क्षेत्र की पुस्तकें चुनी. प्रो. उमेश पाटिल एवं डॉ. उमेश साहू ने बताया कि एक ही परिसर में ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों की पुस्तकें अपनी रूचि से चुनने का अवसर मिल रहा है. विद्यार्थी, शोधार्थी एवं शिक्षक उपयोगी पुस्तकों का चयन कर रहे हैं ताकि उनकी पुस्तके में उपलब्धता भी सुनिश्चित हो सके और इसका लाभ मिल सके. इस अवसर पर प्रो. आरके त्रिवेदी, पुस्तकालयाध्यक्ष प्रो. उमेश पाटिल, प्रो. सुबोध जैन, प्रो. जीएल पुणताम्बेकर, डॉ. संजीव जैन, डॉ. मुकेश साहू, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

# फार्मेसी विभाग में हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

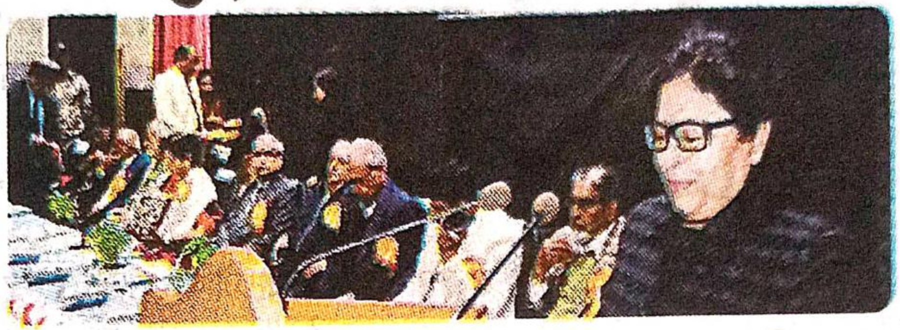

**सागर @ पत्रिका.** विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में फार्मेसी विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का विषय नेनो मेडिसिन फॉर केंसर थेरोनोस्टिक्स था। संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी और रूपरेखा का विवरण डॉ. सुशील कासव द्वारा दिया गया। अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। मुख्य अतिथि प्रो. एसपी व्यास थे। फार्मेसी विश्व विद्यालय दिल्ली के कुलपति डॉ. आर के गोयल ने विषय प्रर्वतन पर प्रकाश डाला। प्रो. शुभनी सराफ ने कैंसर की औषधियां बनाते समय क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए इस पर विस्तृत रूप से समझाया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और प्रो. शुभनी सराफ रायबरेली का विभाग द्वारा स्मृति चिन्ह और शाल श्रीफल से सम्मान किया गया। प्रमुख वक्ता डॉ. दीपेन्द्र सिंह, रायपुर और डॉ. शशांक सिंह थे।

संगोष्ठी

## फार्मेसी विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन, 556 प्रतिभागी लाभांवित

# कैंसर की दवा बनाने में सावधानियां जरूरत

**सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )।** विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में फार्मेसी विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का विषय नेनो मेडिसिन फार कैंसर थेरोनोस्टिक्स था। संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी किया एवं रूपरेखा का विवरण सुशील कासव द्वारा द्रिया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विषय को सम सामयिक बताते हुए आयोजन के लिए शुभकामनाएं दी। मुख्य अतिथि प्रो. व्यास ने विभाग द्वारा दवा निर्माण में किए गए सराहनीय सहयोग के साथ विषय के महत्व पर प्रकाश डाला। फार्मेसी विवि दिल्ली के कुलपति डा. आरके गोयल ने विषय प्रर्वतन पर प्रकाश डाला व नाइपर रायबरेली की डायरेक्टर प्रो. शुभनी सराफ ने कहा कि कैंसर की औषधियां बनाते समय कई सावधानी बरतनी चाहिए। उन्होंने इस विषय को विस्तृत रूप से समझाया। संगोष्ठी में डा. दीपेन्द्र सिंह, डा. शषांक सिंह, प्रो. एनके जैन, प्रो. वीके दीक्षित, प्रो. डीवी कोहली व प्रो. एके सिंघई के लिए कुलपति द्वारा सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी में देश के कोने कोने से 556 प्रतिभागी लाभांवित हुए। कार्यक्रम का संचालन डा. उदिता अग्रवाल एवं पूर्णिमा अग्रवाल ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डा. सुशील कासव द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

विवि में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन के अवसर पर उपस्थित छात्र-छात्राएं। ● नवदुनिया


IMER
their discretion
any of the ads
unia Classified
neither verifies
for any sort of
ds.

**आयोजन** | **औषधियां बनाते समय क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिये, विस्तृत रूप से समझाया भी**

# फार्मेसी विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन

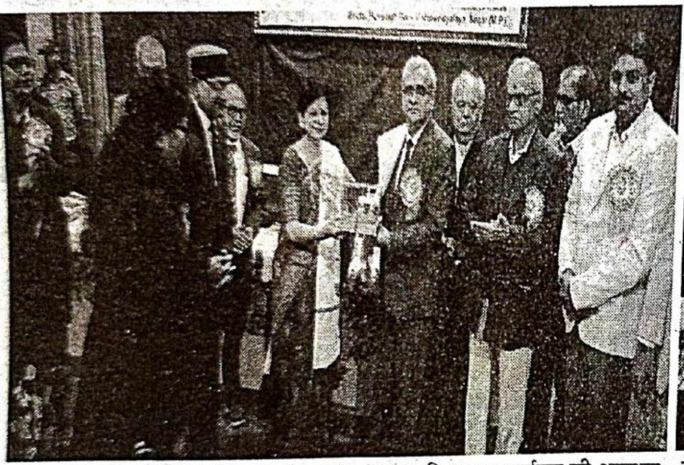

सागर, आचरण संवाददाता।

विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में फार्मेसी विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 31 जनवरी 2023 को हुआ। इस संगोष्ठी का विषय नैनो मेडिसिन फॉर कैंसर थेरेनोस्टिक्स था। कार्यक्रम का आरम्भ डॉ. गौर की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा माल्यापर्ण तथा सरस्वती वन्दना से हुआ। संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना सोनी एवं रूपरेखा का विवरण डॉ. सुशील कासव द्वारा दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि की कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की तथा मुख्य अतिथि प्रो. एस. पी. व्यास थे। प्रो. नीलिमा गप्ता ने संगोष्ठी के विषय को सम सामयिक बताते हुये आयोजन हेतु शुभकामनाये दी। मुख्य अतिथि प्रो. व्यास ने विभाग के द्वारा दवा निर्माण में किये गये सराहनीय सहयोग के साथ विषय के महत्व पर प्रकाश डाला। फार्मेसी विश्वविद्यालय दिल्ली के कुलपति डॉ. आर. के. गोयल ने विषय प्रर्वतन पर प्रकाश डाला तथा नाइपर रायबरेली की डायरेक्टर प्रो. शुभनी सराफ ने कैंसर की औषधियां बनाते समय क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिये विस्तृत रूप से समझाया भी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ऊर्जावान कुलपति, प्रो. नीलिमा गुप्ता तथा प्रो. शुभनी सराफ डायरेक्टर, नाइपर रायबरेली का विभाग द्वारा मोमेन्टो तथा शॉल श्रीफल के द्वारा सम्मान किया गया। संगोष्ठी के अन्य प्रमुख वक्ता डॉ. दीपेन्द्र सिंह, रायपुर तथा डॉ. शशांक सिंह जम्मू थे इस अवसर पर विभाग के पूर्व शिक्षकों प्रो. एन. के. जैन, प्रो. वी. के. दीक्षित, प्रो. डी. वी. कोहली तथा प्रो. ए. के. सिंघई को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिये कुलपति द्वारा सम्मानित किया गया। संगोष्ठी समागम स्वरूप बनी 556 प्रतिभागियों का जो देश के कोने कोने से लाभांवित हुये। वैज्ञानिक सत्र के बाद देर शाम तक चले सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समा बॉध दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. उदिता अग्रवाल एवं पूर्णिमा अग्रवाल ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सुशील कासव द्वारा सभी वैज्ञानिकगण, अतिथिगण, विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन का विशेष रूप से आभार माना।

# पारंपरिक चिकित्सकों का राष्ट्रीय स्वास्थ्य शिविर 2 व 3 फरवरी को

**सागर, आचरण संवाददाता।**

आधुनिक जीवन शैली के कारण जनमानस को विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिसके निदान में स्वदेशी पारम्पर्कि चिकित्सको की उपयोगिता की मांग को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इन्हें स्वीकार किया है। जिसको देखते हुए डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में नवनिर्मित स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र के तहत पुनः 2 से 3 फरवरी, 2023 को पारंपर्कि चिकित्सकों का राष्ट्रीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन सामान्य एवं व्यवहारिक भूगोल विभाग के प्रांगण में होने जा रहा है। जिसका शुभारंभ 2 फरवरी, 2023 को सुबह 9:30 बजे से शिविर की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के कर कमलों द्वारा संपन्न होगा। इस आयोजन के समन्वयक प्रो. के. के. एन. शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं अन्य राज्यों के लगभग 25 परंपरागत चिकित्सक अपनी सहभागिता कर रहे है। इसके साथ ही साथ इनके द्वारा पारंपर्कि जड़ी-बूटियों का प्रदर्शनी भी करेंगे। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व भी इस प्रकार का शिविर स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र के अंतर्गत लगाया जा चुका है। जिनमें अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार भी सम्मिलित है। जिसमें सागर के आम जनमानस लाभान्वित हुए थे तथा यह शिविर काफी लोकप्रिय हुआ था जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गई थी। डॉक्टर शर्मा ने लोगों से निवेदन किया है कि अधिक से अधिक लोग इस शिविर में उपस्थित होकर लाभान्वित हो, जिससे इसकी सार्थकता हो सके।

विवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय शिविर

# असाध्य बीमारियों पर प्रभावी है भारतीय परंपरागत चिकित्सा शैली

शिविर में पहुंची कुलपति

**पत्रिका न्यूज नेटवर्क**
patrika.com

**सागर.** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में गुरुवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा शिविर शुरु हुआ। शिविर में मप्र-छत्तीसगढ़ और दिल्ली के वैद्य व चिकित्सक शामिल हुए। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने परंपरागत चिकित्सा शैली को आधुनिक स्वास्थ्य लाभों की उपयोगिता और महत्व बताते हुए अपनाने का आह्वान किया।

इस मौके पर स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रो. के एन शर्मा ने तीन सालों से आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की जानकारियां दीं। वहीं लोक स्वास्थ्य परंपरा संवर्धन अभियान के समन्वयक निर्मल अवस्थी ने पारंपरिक चिकित्सा व्यवस्था पर कहा कि पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान पर अनुसंधान की आवश्यकता है। भारतीय परंपरागत उपचार पद्धति हजारों साल से स्थापित है। असाध्य बीमारियों के उपचार के लिए सदियों से उपयोग में लाई जा रही है। आदिम जनजातियों में यह ज्ञान आज भी है, इस विधा का प्रमाणीकरण के लिए वैज्ञानिक कसौटी पर कसने की जरूरत है। इसके अलावा विलुप्त हो रहीं भारती की वन औषधियों का संरक्षण किया जाना चाहिए।

# पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान पर अनुसंधान की आवश्यकता

जड़ी बूटियों से दूर होने वाली बीमारियों की जानकारी लेते हुए कुलपति। ● नवदुनिया

**सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )।** डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग परिसर में स्वदेशी ज्ञान अध्येयन केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा शिविर का गुरुवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभारंभ किया। शिविर के दौरान मप्र व छग से आए 25 चिकित्सकों ने जड़ी बूटियों के माध्यम से कई गंभीर बीमारियों के उपचार की जानकारी भी दी। विवि के अलावा शहर के अन्य कई लोगों ने यहां पहुंचकर अपनी जरूरत के हिसाब की दवाएं भी खरीदी।

लोक स्वास्थ्य परंपरा संवर्धन अभियान भारत के समन्वयक निर्मल अवस्थी ने कहा कि पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान पर अनुसंधान की आवश्यकता है। ऐसा ज्ञान जो एपीआई(इंडियन आयुर्वेद फार्मोकोपिया) में उल्लेख न हो एवं वह ज्ञान जो श्रुति एवं संस्कृति आधारित असाध्य ब्रीमारियों के उपचार के लिए सदियों से उपयोग लाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि भारतीय परंपरागत उपचार पद्धति हजारों साल से स्थापित है जो आदिम जनजातियों में यह ज्ञान स्थापित है। आज इस विधा का प्रमाणीकरण के साथ-साथ वैज्ञानिक कसौटी पर कसने की जरूरत है जिसे भारत में प्रचलित लोक स्वास्थ्य परंपरा की निरंतरता को कायम रखते हुए विलुप्त हो रही वन औषधियों का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. केकेएन शर्मा ने इस आयोजन पर प्रकाश डाला और विगत तीन वर्षो से स्वदेशी अध्ययन केंद्र में हुए विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की।

**कुलपति ने ली रोगों की जानकारी :** कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. नीलिमा गुप्ता ने वैद्यो एवं चिकित्सकों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने संस्मरण भी साझा किए। उन्होंने वैद्यो से औषधियों एवं उससे निदान होने वाले रोगों की जानकारी भी ली। आज समापन होगा। इसके बाद कुलपति प्रो. गुप्ता द्वारा पर्यटन के नवीन आयाम पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक डा. आरबी अनुरागी सहायक प्राध्यापक भूगोल द्वारा लिखित है।

# विश्वविद्यालय में शुरू हुआ पारम्परिक चिकित्सकों का दो दिवसीय राष्ट्रीय शिविर

## भारतीय परंपरागत चिकित्सा शैली अत्यंत समृद्ध हैः प्रो गुप्ता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा शिविर का शुभारंभ गुरुवार सुबह 10 बजे भूगोल विभाग के प्रांगण में हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत वीणावादिनी सरस्वती एवं डॉ हरीसिंह गौर की प्रतिमा पर द्वीप प्रज्जवलित एवं माल्यार्पण से हुई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता रहीं। स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रो. केके एन. शर्मा द्वारा सभी अतिथियों, चिकित्सकों, गणमान्य नागरिको एवं सभा में उपस्थित समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रो. शर्मा ने इस आयोजन के बारे में प्रकाश डाला तथा विगत तीन वर्षो से स्वदेशी अध्ययन केंद्र में संपन्न हुए विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। तत्पश्चात लोक स्वास्थ्य परंपरा संवर्धन अभियान भारत के समन्वयक निर्मल अवस्थी द्वारा पारंपरिक चिकित्सा व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। उन्होंने इस पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान पर अनुसंधान की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. नीलिमा गुप्ता ने मप्र, छत्तीसगढ़ एवं दिल्ली से आए हुए समस्त वैद्यो एवं चिकित्सकों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने संस्मरण भी साझा किए। उन्होंने परंपरागत चिकित्सा शैली इसके आधुनिक स्वास्थ्य लाभों की उपयोगिता एवं महत्व बताते हुए वर्तमान समाज से इसको अपनाने के लिए आवाहन भी किया। उद्घाटन सत्र की समाप्ति के पश्चात मुख्य अतिथि प्रो. नीलिमा गुप्ता ने फ ीता काट कर चिकित्सा शिविर का शुभारंभ किया। साथ ही साथ वैद्यो द्वारा एकत्रित औषधियों एवं उससे निदान होने वाले रोगों की जानकारी भी ली।

# भूविज्ञानी बने आठ छात्रों को कुलपति ने दी बधाई

कुलपति ने भूविज्ञानी बने विद्यार्थियों से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं दीं। ● नवदुनिया

**सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )।** डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के भूगर्भ शास्त्र विभाग के 34 विद्यार्थियों ने संघ लोक सेवा आयोग की संयुक्त भूवैज्ञानिक प्राथमिक परीक्षा में फरवरी 2022 में चयन हुआ है। मुख्य परीक्षा जून 2022 में आयोजित की गई थी, जिसमें विभाग से 22 विद्यार्थी साक्षात्कार के लिए उत्तीर्ण हुए एवं विभाग द्वारा जारी अंतिम परिणाम में कुल 8 विद्यार्थियों का चयन हुआ है।

साक्षात्कार प्रक्रिया में सफल होने के बाद उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। इन छात्रों में अमित कुमार, आशीष. राय, रामा अहिरवार, पूर्वा पाण्डेय, मयुस्मिता सेठी, कोकिल राया, जियोशालिस्ट और महेंद्र चौहान एवं संगम सामल जियो हाइड्रोलाजिस्ट बने हैं।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे विवि के लिए बड़ी उपलब्धि बताया है। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच थामस एवं समस्त शिक्षकों और विद्यार्थियों का इस उपलब्धि में बड़ा योगदान रहा। इस उपब्धि पर कुलपति ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

## सार-समाचार

### विश्वविद्यालय के 8 छात्र बने भूवैज्ञानिक

**सागर, देशबन्धु।** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भुगर्भ शास्त्र विभाग के 34 विद्यार्थियों ने संघ लोक सेवा आयोग की संयुक्त भूवैज्ञानिक प्राथमिक आयोजित परीक्षा फरवरी 2022 में चयन हुआ था, जिसकी मुख्य परीक्षा जून 2022 में आयोजित की गई। जिसमें विभाग से 22 विद्यार्थी साक्षात्कार के लिए उत्तीर्ण हुए एवं 31 जनवरी को जारी किये गये अंतिम परिणाम में कुल 8 विद्यार्थियों का चयन हुआ। साक्षात्कार में सफल होकर उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। इनमें अमित कुमार, आशीप राय, रामा अहिरवार, पूर्वा पाण्डेय, मयुस्मिता सेठी, कोकिल राया जियोशालिस्ट और महेंद्र चौहान एवं संगम सामल जियो हाइड्रोलॉजिस्ट बने हैं। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे विवि के लिये बड़ी उपलब्धि बताया है। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच थामस एवं समस्त विभाग के समस्त शिक्षको व विद्यार्थियों का इस उपलब्धि में बड़ा योगदान रहा। इस उपब्धि पर कुलपति ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

स्व सहायता समूह द्वारा संचालित जूस

कुलपति ने बताई बड़ी उपलब्धि

# विश्वविद्यालय के आठ छात्र बने भू-वैज्ञानिक

**सागर.** कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के साथ छात्र।

**पत्रिका न्यूज नेटवर्क**
patrika.com

**सागर.** डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में भूविज्ञान विभाग के 8 छात्रों का चयन संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) में हुआ है। दरअसल, जून 2022 में विभाग के 34 छात्रों ने यूपीएससी की संयुक्त भूवैज्ञानिक प्राथमिक परीक्षा पास की थी। जिसके बाद मुख्य परीक्षा में 22 छात्र पास हुए और साक्षात्कार के लिए चयनित किए गए थे। वहीं 31 जनवरी को जारी हुए परिणामों में 8 छात्रों का चयन हो गया है। यूपीएससी में चयनित छात्र सोमवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता से मिले।

कुलपति ने छात्रों की इस सफलता को विवि की बड़ी उपलब्धि बताया है। चयनित छात्रों में अमित कुमार, आशीष राय, रामा अहिरवार, पूर्वा पाण्डेय, मयुस्मिता सेठी, कोकिल राय जियोशालिस्ट और महेंद्र चौहान व संगम सामल जियो हाइड्रोलॉजिस्ट बने हैं।

**सेमिनार** • दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का कणाद भवन में समापन

# डिजिटल क्रांति से समाज में चुनौतियां आ रही हैं तो उनके समाधान भी हैं : प्रो. चंद्रा

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का कणाद भवन में मंगलवार को समापन हुआ। मानव विज्ञान विभाग एवं पीआरसी मॉस्को, रूस के संयुक्त तत्वावधान में हुए सम्मेलन में पांच देश के विद्वानों ने सहभागिता की। समन्वयक डॉ. सर्वेंद्र यादव ने बताया सम्मेलन विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अकादमिक जगत के लिए बेहद उपयोगी रहा। रूस के मानव वैज्ञानिक डॉ. स्वीयातोसलोव, डॉ. ग्राजियाना, डॉ. अलेकजांद्रा एवं डॉ..अलीना ने जैव एवं सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता पर अपने शोध कार्य प्रस्तुत किए। 17 आमंत्रित वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। आईआईटी कानपुर के प्रो. एके शर्मा ने मानव संसाधन में विविधता पर ध्यान आकर्षित किया। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विनोद चंद्रा ने मानवीय विविधता की समकालीन

अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन के दूसरे दिन भी हुआ विचार मंथन।

प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए विविधता तथा समावेशीकरण, वैश्वीकरण, पारिवारिक संरचना में आ रहे परिवर्तन एवं डिजिटल क्रांति से समाज में आ रही चुनौतियों एवं उनके समाधान पर अपनी बात रखी। संचालन डॉ. सोनिया कौशल ने किया। डॉ. अरिबम विजया सुंदरी ने अतिथियों को प्रमाण-पत्र दिए। आभार विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश कुमार गौतम ने माना।

# डॉ गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर होंगे शोध कार्य : प्रो. दिवाकर सिंह

**सागर, आचरण।** सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ हरीसिंह गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न आयामों पर शोध कार्य प्रारंभ किए जाएंगे। डॉ गौर पीठ के समन्वयक प्रोफ़ेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने जानकारी देते हुए कहा कि डॉ गौर कुशल विधिवेदता और श्रेष्ठ दानवीर होने के साथ ही महान समाज सुधारक एवं प्रख्यात विचारक भी थे। उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को जनमानस तक सुलभ कराने के लिए गौर पीठ के तत्वाधान में निरंतर व्याख्यानमाला, शोध परियोजनायें एवं दस्तावेजीकरण का कार्य निरंतर जारी रहेगा। डॉ गौर के प्रति लोगों का सम्मान एवं समर्पण सराहनीय है। डॉ गौर के प्रति समर्पित कार्ययोजनाओं के लिए सभी के विचार भी सादर आमंत्रित हैं। गौर पीठ की स्थापना के समय से ही लोगों में दान हेतु धनराशि के लिए उत्साह देखा गया है। डॉ गौर पीठ के नाम से गौर पीठ समन्वयक एवं कुलसचिव के संयुक्त नाम से परिचालन हेतु भारतीय स्टेट बैंक, सागर विश्वविद्यालय शाखा में बैंक खाता भी खोल दिया गया है। बैंक का नाम-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी सागर, बैंक खाता क्रमांक 41513155797 आईएफएससी कोड SBIN0001143 है।

# विवि में शुरू होगा इंटीरियर डिजाइनिंग कोर्स

**नई शिक्षा नीति** ● कोर्स शुरू करने के पहले सिलेबस हो रहा तैयार, नए सत्र में विद्यार्थियों को मिल सकता है प्रवेश

**सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )।** डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रशासन जल्द ही इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स शुरू करने की तैयारी कर रहा है। इसका सिलेबस भी लगभग तैयार होने वाला है। संभवतः नए सत्र में विद्यार्थियों को इसमें प्रवेश मिलना भी शुरू हो सकता है। जानकारी के अनुसार केंद्रीय विश्वविद्यालय में नई शिक्षा नीति के तहत अगले सत्र में इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स शुरू करने की लंबे समय से तैयारी चल रही थी। इस कोर्स को करने के बाद युवाओं के लिए रोजगार मिल सकेंगे।

वहीं घर, दफ्तर से लेकर बड़ी-बड़ी होटलों आदि के डेकोरेशन कर अपने घर की सुंदरता में चार-चांद लगवा सकते हैं। इसके अलावा आप मल्टिनेशनल कंपनियों के लिए भी काम करना चाहते हैं तो आपके लिए अच्छी खबर है। दरअसल डा. हरी सिंह गौर यह मप्र का पहला विवि होगा, जिसमें डिप्लोमा से लेकर डिग्री कोर्स होंगे। एनइपी के तहत

डा.हरीसिंह गौर विवि। ● फाइल फोटो

इसकी डिजाइन भी तैयार कर ली गई है और मंजूरी के लिए एपीसी के पास भेज दिया गया है। यहां से मंजूरी मिलने के बाद सिलेबस तैयार होगा। सब कुछ ठीक रहा तो अगले सत्र से यह कोर्स विवि में शुरू हो जाएगा।

**निजी कालेज व दूसरे प्रदेशों में चल है यह कोर्स :** कुलपति के निर्देश पर इंटीनियर डिजाइनिंग कोर्स शुरू करने की तैयारी चल रही है। इसकी डिजाइन लगभग तैयार कर ली गई है, लेकिन अब यहां के विशेषज्ञ इस कोर्स का सिलेबस पूरा करने में लगे हुए हैं। इसके बाद संभावना जताई जा रही है कि यह कोर्स नए सत्र में विवि में भी संचालित हो सकता है। प्रोफेशन कोर्स अभी तक विवि में कम्युनिटी कालेज में संचालित कर रहा है, लेकिन इंटीरियर डिजाइनिंग कोर्स शुरू नहीं है। बताया जाता है कि संभवतः यह कोर्स इंस्टीट्यूट आफ इंजीनिरिंग के माध्यम से संचालित हो सकता है। सरकारी विवि में देवी अहिल्या बाई इंदौर और डा. आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विवि महू में यह कोर्स संचालित हैं। वहीं डिग्री कोर्स नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइनिंग अहमदाबाद, नई शिक्षा नीति के अनुसार कुरुक्षेत्र विवि, पंजाब विवि आइआइटी कानपुर सहित देश के कई केंद्रीय विश्वविद्यालयों, आइआइटी जैसे संस्थानों में अलग-अलग स्पेशलाइजेशन के साथ डिप्लोमा, वोकेशनल और डिग्री पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

### निजी संस्थानों में है 50 हजार से ज्यादा है फीस

प्रदेश के कुछ निजी संस्थानों में इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स चल रहा है, लेकिन इसे करने में 80 से 90 हजार रुपए चुकाना पड़ते हैं। हालांकि केंद्रीय विवि में इसकी फीस क्या होगी यह निर्णय बाद में लिया जाएगा, संभावना जताई जा रही है कि यहां निजी संस्थानों की अपेक्षा कम ही फीस होगी। विवि में यह कोर्स शुरू होने से सस्ती फीस में छात्र इंटीरियर डिजाइनर बन सकते हैं। जानकारी के अनुसार फिलहाल जिले में संचालित कई शासकीय संस्थाओं में इस तरह का कोर्स संचालित नहीं है।

> कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देश पर इंटीनियर डिजाइनिंग के कोर्स को शुरू करने की तैयारी चल रही है। नई शिक्षा नीति के अनुसार इसका सिलेबस तैयार किया जा रहा है। प्रक्रिया पूरी होने के बाद यह आगामी सत्र से शुरू हो सकता है, इसका अंतिम निर्णय विवि प्रशासन करेगा।
>
> **डा. विवेक जयसवाल**, पीआरओ डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि

# विवि के खुले मंच पर हुआ 'इश्कियापा'

आचरण संवाददाता

सागर। मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय भोपाल एवं सांस्कृतिक परिषद, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संयुक्त तत्वाधान में चल रही नाट्य कार्यशाला के समापन के अवसर पर नाटक 'इश्कियापा' का मंचन प्रदर्शनकारी कला विभाग के मुक्ताकाशी मंच पर हुआ. नाटक की कहानी एक फिल्म स्टूडियो में फिल्म की शूटिंग से शुरू होती है जिसमें कहानी के अंदर एक और कहानी दिखाई जाती है जोकि प्रेम कहानियों और प्रेमी प्रेमिका के मध्य क्रिया कलापों को रचनात्मक ढंग से प्रदर्शित करते हुए दर्शकों को गुदगुदाती है। फिल्म के निर्माण की इस कहानी में लेखक , निर्देशक, कैमरामैन और अभिनेता मिलकर 50-60 के दशक की एक फिल्म की मनगढ़ंत कहानी बनाते हैं। यह नाट्य प्रस्तुति पूर्ण रूप से इंप्रोवाइजेशन प्रक्रिया के द्वारा तैयार की गई। कलाकारों के चरित्र चित्रण , संगीत, और रचनात्मकता के संयोजन तथा कलाकारों के अभिनय के माध्यम से दर्शकों ने वर्तमान समय में पुराने जमाने की फिल्मों में दिखाई जाने वाली कहानी का जीवंत अनुभव लिया। नाटक का निर्देशन मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय भोपाल के पूर्व छात्र आकाश विश्वकर्मा ने किया. तथा नाटक की कथा मधुसूदन पांडे ने गढ़ी। नाटक के प्रमुख कलाकारों में आयुष चौरसिया, अर्पित दुबे, अमन ठाकुर, शुभम पटेल, प्रवीण केम्या, रितिका सेन, आयुषी चौरसिया, भास्कर ठाकुर, प्रसन्न विश्वकर्मा, भूमि बाथरी , यशवनी गोंड, सुदीप नेमा, सिया, प्रिया, सागर ठाकुर, अश्वनी , पारस, आशीष, हिमांशु ,अखिलेश,ने तथा प्रकाश संयोजन संजय कोरी, रोहित रजक तथा संगीत, शुभम , निक्की, मैक्लिन और आनंद अग्रवाल ने किया। मंच प्रबंधन विश्वराज सुनारया ने किया। कार्यशाला तथा प्रस्तुति में विवि के वर्तमान तथा पूर्व छात्र सम्मिलित रहे। नाटक के मंचन में सभी पक्षों द्वारा अद्भुत ताल-मेल देखने को मिला. नाट्य-प्रस्तुति के दौरान कलाकारों की हौसला अफजाई के लिए सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ. विवेक जायसवाल, अल्ताफ़ मुलानी के साथ ही बड़ी संख्या में छात्र तथा दर्शक उपस्थित रहे.

# विवि का दीक्षांत समारोह 14 मार्च को, पंजीयन शुरू

**सागर |** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय का 31वां दीक्षांत समारोह 14 मार्च को होगा। पहले यह 25 नवंबर 2022 को होना था। सीबीसीएस के तहत वर्ष 2021-22 में उत्तीर्ण सभी नियमित स्नातक एवं स्नातकोत्तर अभ्यर्थी तथा 30 मार्च 2022 के बाद जिन अभ्यर्थियों ने पीएचडी, डीएससी या डीलिट की उपाधि अर्जित की है, उन्हें उपाधि दी जाएगी। ऐसे सभी अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर बुधवार से 22 फरवरी की रात 11.59 बजे तक पंजीयन शुल्क एक हजार रुपए का ऑनलाइन भुगतान कर दीक्षांत समारोह में उपाधि हासिल करने पंजीयन कराना होगा। परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र पी गादेवार द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक जिन विद्यार्थियों ने पूर्व में पंजीयन कराया है, उन्हें दोबारा पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं है। पंजीकृत विद्यार्थियों को जल्दी ही प्रवेश पास या पत्र जारी किया जाएगा। निर्धारित ड्रेस कोड के तहत छात्र को सफेद कुर्ता और पायजामा तो छात्राओं को सफेद सलवार और कुर्ता की व्यवस्था स्वयं करना होगी। विश्वविद्यालय द्वारा एक उपर्णी (स्टॉल) और बुंदेली सतरंगी पगड़ी दी जाएगी।

# सांस्कृतिक विविधता पर शोध वैश्विक विकास में नए आयाम जोड़ेगा : कुलपति

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करती हुईं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग द्वारा 'कंटेम्प्रेरी ट्रेंड्स इन सोशियो कल्चरल एन्ड बायोलाजिकल वैरिएशन रिविज़िटिंग एथनोग्राफिक मेथड्स आफ ह्यूमन डायवर्सिटी' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन का सोमवार को कणाद भवन में शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम की मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्व की विविधता को समझने के लिए मानव विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन बेहद महत्वपूर्ण साबित होगा। भारत की डेमोग्राफिक विविधता एवं यूरेशिया की आबादी के तुलनात्मक अध्ययन से उपयोगी परिणाम मिलेंगे। विश्वविद्यालय का मानव विज्ञान विभाग विविधता को प्रतिबिंबित करता है। इसी प्रकार उन्होंने विश्व में पाए जाने वाली विभिन्न प्रजातियों के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि कई तरह की विविधता होते हुए भी भारत में एकता है। विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग एवं मास्को स्थित संस्थान के बीच हुए अकादमिक समझौते के परिणामस्वरूप ही यह संगोष्ठी आयोजित हुई है।

## कई विशेषज्ञों ने रखे विचार

मुख्य वक्ता प्रो. देवाशीष देवनाथ ने भारत में मानव विज्ञान के उदय एवं उद्विकास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। प्रो. नीरज वेदवान ने कहा जैविक, आर्थिक, विविधता का मानव विज्ञान की दृष्टि से अधययन करना सम्पूर्ण अध्ययन है। कार्यक्रम का संचालन विभाग की सहायक प्रोफ़ेसर दो. अरिबम विजयासुन्दरी ने किया। विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश गौतम ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रो. श्वेता यादव, प्रो. चन्दा बेन, प्रो. एमएल खान, सोनिया कौशल, केएस माथुर, डा. हेमंत, प्रो. नवीन कानगो, पीके शर्मा सहित विश्वविद्यालय के कई शिक्षक, शोधार्थी एवं देश-विदेश से कई प्रतिभागी जुड़े रहे।

## देश-विदेश के 103 प्रतिभागी हो रहे शामिल

पीआरसी मास्को, रूस के निदेशक डा. मिखाइल याकुशेव एवं डा. डेनिस पेझेमस्की की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। डा. गौर के चित्र पर पुष्प अर्पित करने के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। प्रो. केकेएन शर्मा ने मानवविज्ञानियों का स्वागत किया।

अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन के समन्वयक डा. सर्वेन्द्र यादव ने बताया कि अंतराष्ट्रीय सम्मलेन में कुल 103 प्रतिभागी शामिल हो रहे हैं, जिसमें रूस से 10, पोलैंड से 1, अमेरिका से 1, बांग्लादेश से 1 एवं भारत से 88 शोध सारांश प्राप्त हुए। दो दिवसीय सम्मलेन में भारत के शीर्ष संस्थानों के विद्वान अपना वक्तव्य देंगे, जिसमें अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के प्रो. अमन मदान, आइआइटी दिल्ली से प्रो. सर्वेश्वर साहू, आइआइटी कानपुर से प्रो. एके शर्मा एवं जेएनयू देश के कई विद्वान ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

---

### विश्वविद्यालय में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

# दो संस्थानों के साझा विचारों और शोध से मानव जाति का कल्याण होगाः कुलपति

भास्कर संवाददाता। सागर

विश्व की विविधता को समझने मानव विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित यह सम्मेलन बेहद महत्वपूर्ण साबित होगा। भारत की डेमोग्राफिक विविधता एवं यूरेशिया की आबादी के तुलनात्मक अध्ययन से उपयोगी परिणाम मिलेंगे। विश्वविद्यालय का मानव विज्ञान विभाग विविधता को प्रतिबिंबित करता है। कई तरह की विविधता होते हुए भी भारत में एकता है। यह बात डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग द्वारा कंटेम्परेरी ट्रेंड्स इन सोशियो कल्चरल एंड बायोलॉजिकल वेरिएशनः रि-विजिटिंग एथनोग्राफिक मैथड्स ऑफ ह्यूमन डायवर्सिटी विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर कही। कणाद भवन में हुए कार्यक्रम की मुख्य संरक्षक कुलपति ने विश्व में पाए जाने वाली विभिन्न प्रजातियों के बारे में चर्चा की। उन्होंने भारत की बहुभाषिकता, बहु सांस्कृतिक परिवेश और जैविक विविधताओं की भी चर्चा की। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग एवं मास्को स्थित संस्थान के बीच हुए अकादमिक समझौते के परिणामस्वरूप ही यह संगोष्ठी हुई है। यह विभाग और विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। संगोष्ठी के माध्यम से साझा विचारों और शोध के माध्यम से मानव जाति का कल्याण तो होगा ही, साथ ही सभी देशों के शोधार्थी और शिक्षक भी लाभान्वित होंगे। मुख्य वक्ता डॉ. बीआर अंबेडकर विवि महू के प्रो. देबाशीष देबनाथ ने भारत में मानव विज्ञान के उदय एवं उद्विकास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। पीआरसी मॉस्को रूस के निदेशक डॉ. मिखाइल याकुशेव, उपनिदेशक डॉ. डेनिस पेझेमस्की भी ऑनलाइन जुड़े। डीन प्रो. केकेएन शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। अतिथियों ने सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन किया गया। प्रो. नीरज वेदवान ने कहा जैविक, आर्थिक, विविधता का मानव विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन करना संपूर्ण अध्ययन है। संचालन डॉ. अरिबम विजया सुंदरी ने किया। आभार विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश गौतम ने माना। सम्मेलन के समन्वयक डॉ. सर्वेन्द्र यादव ने बताया सागर विश्वविद्यालय, पीआरसी मास्को, भारतीय मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 103 प्रतिभागी शामिल हो रहे हैं। जिसमें रूस से 10, पोलैंड, अमेरिका और बांग्लादेश से 1-1 एवं भारत से 88 शोध सारांश मिले हैं। दो दिवसीय सम्मेलन में भारत के शीर्ष संस्थानों के विद्वान वक्तव्य देंगे। अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के प्रो. अमन मदान, आईआईटी दिल्ली से प्रो. सर्वेश्वर साहू, आईआईटी कानपुर से प्रो. एके शर्मा सहित अन्य संस्थानों के विद्वान अपना शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

---

### डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

# 'जैव व सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता पर शोध वैश्विक विकास में नए आयाम जोड़ेगा'

## देश-विदेश से 103 प्रतिभागी हुए शामिल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित अतिथि।

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग द्वारा कंटेम्प्रेरी ट्रेंड्स इन सोशियो कल्चरल एंड बॉयोलॉजिकल वैरिएशन रिविजिटिंग एथनोग्रॉफिक मैथड्स ऑफ ह्यूमन डायवर्सिटी विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ सोमवार को कणाद भवन में हुआ।

विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्व की विविधता को समझने के लिए मानव विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन बेहद महत्वपूर्ण साबित होगा। देश की डेमोग्रॉफिक विविधता व यूरेशिया की आबादी के तुलनात्मक अध्ययन से उपयोगी परिणाम मिलेंगे। विश्वविद्यालय का मानव विज्ञान विभाग विविधता को प्रतिबिंबित करता है। विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग और मॉस्को स्थित संस्थान के बीच हुए अकादमिक समझौते के परिणामस्वरूप ही यह संगोष्ठी आयोजित हुई है। यह विभाग और विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समन्वयक डॉ. सर्वेन्द्र यादव ने बताया कि डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, पीआरसी मास्को, भारतीय मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस सम्मेलन में कुल 103 प्रतिभागी शामिल हो रहे हैं। रूस से 10, पोलैंड, अमेरिका व बांग्लादेश से एक-एक और भारत से 88 शोध सारांश प्राप्त हुए। दो दिवसीय सम्मलेन में देश के शीर्ष संस्थानों के विद्वान अपना वक्तव्य देंगे, जिसमें अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के प्रो. अमन मदान, आइआइटी दिल्ली से प्रो. सर्वेश्वर साहू, आइआइटी कानपुर से प्रो. एके शर्मा समेत अन्य शामिल हैं।

# विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये विभिन्न गांव

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की ही भाँति ही इस वर्ष भी सात दिवसीय सामुदायिक कार्य का आयोजन 10-17 फरवरी, 2023 तक किया जा रहा है। उक्त सात दिवसीय सामुदायिक कार्य में बी.ए. बी.एड./ बी. एससी. बी.एड. (4 वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) अष्टम सेमेस्टर के सभी छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकायें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, एवं पर्यावरण जागरूकता संबंधी विभिन्न कार्यों को विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए विभिन्न गावों यथा पथरिया जाट, सिरोंजा, बरारू, पटकुई और मैनपानी में संपन्न कर रहे हैं। सात दिवसीय सामुदायिक कार्य के पांचवें दिन ग्राम पथरिया जाट में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन पथरिया जाट ग्राम के पंचायत भवन में आयोजित किया गया द्व उक्त अवसर पर विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विभाग के चिकित्सा अधिकारी डॉ भूपेंद्र कुमार पटेल द्वारा शासकीय माध्यमिक शाला के सभी विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य परीक्षण के पश्चात लड़कों और लड़कियों संतुलित भोजन करने की सलाह चिकित्सा अधिकारी द्वारा दी गयी । उक्त अवसर पर शिक्षाशास्त्रविभाग की अध्यक्षा डॉ. रश्मि जैन, ग्राम सरपंच प्रमोद यादव और शासकीय माध्यमिक शाला के प्राचार्य दुबे,सात दिवसीय सामुदायिक कार्य कार्यक्रम के समंवयक डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति एवं शिक्षा शास्त्र विभाग की शिक्षिका डॉ शकीला खान सहित बी.ए. बी .एड./ बीएससी. बी.एड. (4 वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) के गिजुभाईबधेका समूह के सभी 21 सदस्य उपस्थित रहे। गिजुभाई बधेका समूह के सभी 21 सदस्य ने स्वास्थ्य परीक्षण कराया और अंत में अतिथियों का धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

**गर्व •** विश्व हिंदी सम्मेलन शुरू, फिजी के राष्ट्रपति ने कहा- हिंदी दिल की भाषा

# फिजी में 12वीं तक अनिवार्य होगी हिंदी, शिक्षकों को ट्रेनिंग देगा भारत

फिजी से देवेंद्र भटनागर

आजादी के अमृतकाल में भारत ने नया मिशन शुरू किया है। मिशन है देश की मातृभाषा हिंदी को वैश्विक दर्जा दिलाने का। इस महाअभियान की शुरुआत अफ्रीकी देश फिजी से हो गई है। जल्द ही इसे लेकर केंद्र सरकार कई प्रोजेक्ट भी लॉन्च करने जा रही है। फिजी के नांदी में बुधवार को 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरुआत करते हुए विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि वह युग पीछे छूट गया, जब प्रगति को पश्चिमीकरण के समान माना जाता था। औपनिवेशिक युग में दबाई गई तमाम भाषाएं अब वैश्विक मंच पर गूंज रही हैं। वहीं, फिजी के शिक्षा मंत्रालय 12वीं कक्षा तक हिंदी अनिवार्य करने की तैयारी की है। अभी तक 8वीं कक्षा तक हिंदी भाषा कंपल्सरी थी। इतना ही नहीं, हिंदी के शिक्षकों की संख्या भी बढ़ाए जाने की तैयारी है। इन्हें भारत ट्रेनिंग देगा। ये संकेत दिए हैं फिजी के शिक्षा मंत्रालय ने। भास्कर से बात करते हुए मंत्रालय की एक अधिकारी ने कहा कि फिजी में अभी हिंदी को लेकर दो तरह की समस्याएं हैं। पहली- फिजियन हिंदी। दूसरा शिक्षकों की कमी। फिजियन हिंदी का उच्चारण वैसा ही है, जैसा बॉलीवुड फिल्मों में अंग्रेजों द्वारा किया जाता है। ऐसी हिंदी से बच्चों को भविष्य में कोई फायदा नहीं होता। इससे पैरेंट्स भी हिंदी की अनिवार्यता को लेकर उत्साहित नहीं रहते। लेकिन नई सरकार ने फिजी में बड़ी संख्या में रहने वाले भारतीयों की इच्छा को समझते हुए स्कूलों में 12वीं तक हिंदी विषय को अनिवार्य करने का निर्णय लिया है। संभवतः आगामी सत्र से यह लागू हो जाएगा। दूसरी ओर, फिजी के राष्ट्रपति विलियम काटोनिवेरे ने कहा कि हिंदी हमारे दिल में बसी भाषा है।

## चीन को परेशान करेगा फिजी का हिंदी सम्मेलन

फिजी कहने को भले ही 9-10 लाख की आबादी वाला छोटा सा देश हो, लेकिन रणनीतिक रूप से यह बेहद महत्वपूर्ण है। खासकर चीन के नजरिये से। फिजी से चीन का 2011 में सुरक्षा समझौता हुआ था। नई सरकार ने जनवरी 2023 में चीन से समझौता तोड़ दिया। अब भारत से करीबी है।

## टेक्नोलॉजी की मदद से विश्व की किसी भी भाषा को हिंदी में पढ़ सकेंगे

सम्मेलन में विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन ने कहा कि भारत सरकार फिजी में लैंग्वेज लैब खोलने जा रही है। यह फिजी के हिंदी प्रेमियों को भारत का उपहार है। इस लैब का मकसद सही हिंदी सीखना और सिखाना है। वहीं गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने बताया कि जल्द ही हिंदी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा में शामिल होगी। मिश्रा ने बताया कि केंद्र सरकार एआई में हिंदी की उपयोगिता बढ़ाने पर लगातार काम कर रही है। इसके लिए टेक्नोलॉजी का भी सहारा ले रही है। हमने कंठस्थ, मंत्रा जैसे एप बनाए हैं। कोशिश यह हो रही है कि दुनिया की किसी भी भाषा को देवनागरी में पढ़ा और समझा जा सके।

# विवि में तनाव प्रबंधन पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन

**सागर, देशबन्धु।** संगीत विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सप्त दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला तनाव प्रबंधन हेतु संगीत चिकित्साका उद्घाटन हुआ जो 20 से 26 फरवरी तक आयोजित हो रही। कार्यशाला प्रारंभ मां सरस्वती जी की वंदना से हुआ। विभागीय छात्र-छात्राओं के द्वारा सस्वर वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यशाला के प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. नवीन कोंगो डायरेक्टर अकादमिक गतिविधि रहे। बीज वक्तव्य डॉ. ज्ञानेश प्रसाद तिवारी एवं अध्यक्षीय उद्बोधन संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. ललित मोहन ने दिया। कार्यशाला के संयोजक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने कार्यशाला के औचित्य एवं सात दिनों में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन जुड़ने वाले अखिल भारतीय विषय विशेषज्ञों के परिचय एवं उनके द्वारा प्रवर्तन किये जाने वाले उपविषयों पर प्रकाश डाला। प्रो. नवीन कोंगो ने आज के नित परिवर्तनशील जगत में शास्त्रीय संगीत की चिर स्थायी प्रकृति पर प्रकाश डाला। डॉ. अरुण कुमार साब ने संगीत चिकित्सा पर संक्षिप्त व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी सत्र में ही राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय अखिलेश अहिरवार ने राग नटभैरव की की प्रस्तुति दी। इसके अंतर्गत इन्होंने विलंबित ख्याल द्रुत ख्याल तराना आदि प्रस्तुत किया तबले पर संगत आशुतोष श्रीवास्तव एवं हारमोनियम पर संगत यशगोपाल श्रीवास्तव ने की। प्रथम सत्र के समापन पर डॉ. राहुल स्वर्णकार ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मनोविज्ञान विभाग से डॉ. देवकीनंदन शर्मा, डॉ. शारदा विश्वकर्मा, डॉ. नितिन कोरपाल, अर्पित तिवारी सहित अनेक शोधार्थी शिक्षक विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यशाला के द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. नीना श्रीवास्तव जी रहीं। नीना जी ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर कार्यशाला के प्रतिभागियों को गायन की बारीकियों से अवगत कराया। इसी सत्र के द्वितीय विषय विशेषज्ञ के रूप में भारतीय संगीत चिकित्सा के प्रणेता डॉ. टीवी साईराम थे। इसी सत्र में ही राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय से पधारे श्री पार्थो घोष ने ध्वनि मुद्रण पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया जिससे छात्र वर्ग लाभान्वित हुआ। कार्यक्रम का संचालन स्तुति खंपरिया एवं क्षितिज जैन ने किया।

# विवि में प्रवेश के आवेदन शुरू

सागर। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में संचालित स्नातक पाठ्यक्रमों–बीए, बीएबीएड, बैचलर आफ फाइन आर्ट, बीकाम., बीबीए (आनर्स), बीएससी (बायो. गुरप), बीएससी बीएड (बायो.ग्रुप), बीएससी (मैथ्स ग्रुप), बीएएलएलबी(आनर्स) आदि में प्रवेश लेने के लिए आनलाइन आवेदन शुरू हो गए हैं। इच्छुक अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि वे आनलाइन आवेदन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा दिनांक 12 मार्च तक भर सकते हैं। (नप्र)

# सप्त दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला संगीत चिकित्सा का हुआ उद्घाटन

आचरण संवाददाता।

**सागर।** संगीत विभाग डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में सप्त दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला तनाव प्रबंधन हेतु संगीत चिकित्सा का उद्घाटन हुआ जो 20 फरवरी से 26 फरवरी 2023 तक आयोजित हो रही।

कार्यशाला प्रारंभ मां सरस्वती जी की वंदना से हुआ। विभागीय छात्र छात्राओं के द्वारा सस्वर वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यशाला के प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो.नवीन कोंगो डायरेक्टर अकादमिक गतिविधि रहे। बीज वक्तव्य डॉ.ज्ञानेश प्रसाद तिवारी एवं अध्यक्षीय उद्बोधन संगीत विभागाध्यक्ष डॉ.ललित मोहन ने दिया।

कार्यशाला के संयोजक डॉ.अवधेश प्रताप सिंह तोमर जी ने कार्यशाला के औचित्य एवं सात दिनों में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन जुड़ने वाले अखिल भारतीय विषय विशेषज्ञों के परिचय एवं उनके द्वारा प्रवर्तन किये जाने वाले उपविषयों पर प्रकाश डाला। प्रो.नवीन कोंगो ने आज के नित परिवर्तनशील जगत में शास्त्रीय संगीत की चिरस्थायी प्रकृति पर प्रकाश डाला।

डॉ अरुण कुमार साब ने संगीत चिकित्सा पर संक्षिप्त व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसी सत्र में ही राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय से पधारे अखिलेश अहिरवार ने राग नटभैरव की की प्रस्तुति दी इसके अंतर्गत इन्होंने विलंबित ख्याल द्रुत ख्याल तराना आदि प्रस्तुत किया तबले पर संगत आशुतोष श्रीवास्तव एवं हारमोनियम पर संगत यशगोपाल श्रीवास्तव ने की। प्रथम सत्र के समापन पर डॉ राहुल स्वर्णकार जी ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर मनोविज्ञान विभाग से डॉ. देवकीनंदन शर्मा, डॉ.शारदा विश्वकर्मा, डॉ. नितिन कोरपाल ए श्री अर्पित तिवारी सहित अनेक शोधार्थी शिक्षक विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यशाला के द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो.नीना श्रीवास्तव जी रहीं।

नीना ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर कार्यशाला के प्रतिभागियों को गायन की बारीकियों से अवगत कराया। इसी सत्र के द्वितीय विषय विशेषज्ञ के रूप में भारतीय संगीत चिकित्सा के प्रणेता डॉ. टी.वी. साईराम थे। इसी सत्र में ही राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय से पधारे पार्थो घोष ने ध्वनि मुद्रण पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया जिससे छात्र वर्ग लाभान्वित हुआ। कार्यक्रम का संचालन कुण्स्तुति खंपरिया एवं क्षितिज जैन ने किया। शैलेन्द्र सिंह राजपूत, आकांश जैन एवं यशगोपाल श्रीवास्तव के कुशल समन्वय में कार्यशाला का प्रथम दिवस संपन्न हुआ।

## डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में हुआ आयोजन

# राष्ट्रीय कार्यशाला में बताई संगीत की बारीकियां

सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में आयोजित संगीत चिकित्सा पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन संगीत की बारीकियों से अवगत कराया। प्रथम सत्र में प्रथम वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में डा. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगीत चिकित्सा के स्वरूप पर प्रकाश डाला एवं सुगम संगीत की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। इसके बाद मनोविज्ञान के विद्वान देवकीनंदन शर्मा ने संगीत एवं मनोविज्ञान के संबंध पर प्रकाश डालते हुए तनाव मुक्ति में संगीत का महत्व स्पष्ट किया। अभ्यास सत्र के अंतर्गत शोध छात्र अखिलेश अहिरवार ने अभ्यास की विभिन्न तकनीकों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। द्वितीय सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में संगीत चिकित्सा के प्रणेता टीएन साईं राम ने समग्र संगीत चिकित्सा पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के दौरान संगीत की जानकारी देते हुए प्रतिभागी। ● नवदुनिया

कार्यशाला के दौरान संगीत की जानकारी देते हुए प्रतिभागी।

### राग यमन पर आधारित ख्याल गायन की प्रस्तुति

संध्याकालीन एवं अंतिम सत्र में प्रथम प्रस्तुति आदर्श संगीत महाविद्यालय के विशेष दल के प्रतिभागियों की रही। प्राचार्य रागिनी श्रीवास्तव एवं यश गोपाल श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में यह प्रस्तुति आयोजित की गई। उन्होंने राग यमन पर आधारित ख्याल गायन की प्रस्तुति दी जिसे खूब सराहना मिली। इसके बाद अंशुल आठिया ने राग बागेश्वरी पर आधारित गीत की प्रस्तुति दी। प्रस्तुतियों के क्रम में अगली प्रस्तुति कल्पना एवं गोलू विश्वकर्मा की रही। उन्होंने राग बिहाग में विलंबित एवं द्रुत खयाल प्रस्तुत किया। सत्र की अंतिम प्रस्तुति अतुल पथरोल की रही। तबले पर संगत आशुतोष श्रीवास्तव एवं हारमोनियम पर संगत कौशल मेहरा ने की। आभार डा. राहुल स्वर्णकार ने किया।

अनुश्री अवस्थी ने किया। नवीन प्रमुख वेदांत चौहान, एसएफएस प्रमुख अनुराग जाटव रहे।

# जनजातीय भाषाओं से मानव सभ्यता को संरक्षित किया जा सकता है : डॉ. वर्मा

**आचरण संवाददाता।**

**सागर।** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भाषा नीति और भाषा संबंधी अनुशंसाओं के आलोक में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र और राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'मध्यप्रदेश की जनजातीय भाषाओं में प्रौढ़ शिक्षा पर 'इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री का विकास' विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आज चौबीसवें अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर शुभारम्भ किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. मनीष वर्मा संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण संभाग सागर, विशिष्ट अतिथि डॉ. आशुतोष गोस्वामी सहायक संचालक, लोक शिक्षण संभाग सागर, प्रौढ़ शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक डॉ. चिट्टी बाबू पुच्चा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली की प्रोजेक्ट फेलो सुश्री ज्योति तिवारी एवं समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा उपस्थित थे। इसके अलावा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सागर के शिक्षकगण, सागर संभाग के अंतर्गत आने वाले कुल 37 विकासखंडों में से 35 विकासखंडों के जिला एवं विकासखंड साक्षरता समन्वयकों, विभिन्न विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों, प्राचार्यों, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने सहभागिता की। कार्यशाला का प्रारम्भ सरस्वती वंदना के संगीतमय गायन, मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। कार्यशाला की शुरुआत में डॉ.संजय शर्मा ने वक्ताओं परिचय देते हुए एवं विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 चार पाठ्यचर्या प्रारूपों की बात करती है, ये कार्यशाला उसी का एक विंस्तार है जिसमें हम मध्यप्रदेश की जनजातीय भाषाओं में पाठ्यक्रम विकास पर चर्चा करने जा रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने आगे बताया कि भाषा मानव पूंजी है, जो समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को हम तक पहुंचाती है कुछ आंकड़ों के हवाले से भारत और दुनिया में विलुप्त हो रहीं तमाम भाषाओं के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि चूंकि जनजातीय समुदाय के पास समृद्ध चिकित्सा पद्धति एवं ज्ञान भण्डार उपलब्ध है और इसे तभी बचाया जा सकता है जब हम इन लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली तमाम जनजातीय भाषाओं को बचाएंगे।

विश्वविद्यालय ही वे स्थान हैं जहां पर ये भाषाएं बच सकती हैं और समृद्ध हो सकती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली की प्रोजेक्ट फेलो सुश्री ज्योति तिवारी ने कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि आदिवासियों के पास समृद्ध ज्ञान भण्डार है जिसे आम लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए। कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. मनीष वर्मा ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि साक्षरता अभियान का सही आउटपुट, सर्वेक्षण, सकारात्मक वातावरण के निर्माण, रुचिकर, आकर्षक एवं परिवेश से सम्बन्धित विषयवस्तु, दोनों सीखने वाले और सिखाने वाले में उत्साह इन सबके मध्य एक समन्वय और समन्वित प्रयास से ही निकलकर आ सकता है। इसके लिए एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह समयबद्ध प्रक्रियाएं हैं जिन्हें एक निश्चित समय सीमा में पूर्ण किया जाना चाहिए। प्रो.ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि इस प्रकृति में उपलब्ध कोई भी चीज निरर्थक नहीं है हर चीज का एक अर्थ होता है। हम इन प्रकृतिप्रदत्त चीजों और इस समृद्ध संस्कृति से दूर हो चुके हैं लेकिन आदिवासियों ने उसे अभी भी बचाकर रखा है। चूंकि भाषा संस्कृति से सम्बन्धित होती है इसलिए हमें इन जनजातीय भाषाओं को बचाना होगा।

### कई समाजसेवियों ने विवि पहुंचकर जमा कराई राशि

# गौर पीठ के लिए दान दिए एक लाख दो हजार रुपए

**सागर( नवदुनिया प्रतिनिधि )। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में स्थापित होने वाली डा. गौर पीठ के लिए दान राशि देने वालों की संख्या में लगातार इजाफा होता जा रहा है। कई लोग उत्साह के साथ अकेले दान दे रहे हैं तो कई अपने साथ-साथ दूसरों को भी दान देने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शहर के समाजसेवी** रघु ठाकुर ने कुछ लोगों को प्रेरित करते हुए विभिन्न लोगों का सहयोग लेते हुए गौर पीठ के लिए एक लाख दो हजार रुपए की राशि दान दी है। उन्होंने डा. गौर के प्रति अपनी व सहयोगियों की ओर से एक लाख रुपए देने की घोषणा की थी। गौर पीठ समन्वयक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने बताया कि समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर ने डा. गौर पीठ को एक लाख रुपये दान देने के लिए पूर्व में घोषणा की थी। इस दिशा में उन्होंने एक प्रेरक कदम उठाया और उन्होंने शहर के कई समाजसेवी लोगों को प्रेरित किया और एक लाख दो हजार रुपए की दान राशि डा. गौर पीठ के लिए जमा कराए। उन्होंने दूसरे लोगों को भी गौर पीठ में सहयोग करने की अपील की है।

डा. हरीसिंह गौर।

**इन लोगों ने दान में किया**

सहयोग : डा. हरीसिंह गौर के प्रति लोगों के मन में श्रद्धा भाव अपार और सम्मान है। इस दान राशि में डा. बद्री प्रसाद ने पचीस हजार रुपए दान दिए हैं।

इसके अलावा मुकुल पुरोहित, सुरेन्द्र सुहाने, इन्द्रपाल सिंह, अभय सिंघई, जेके जैन, अक्षय जैन, श्री राम सेवा समिति ने ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये दान दिए हैं। डा. गौर पीठ को दी गई दान राशि के लिए विश्वविद्यालय परिवार ने श्री ठाकुर और सभी दान दाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया है।

# तनाव मुक्ति में है संगीत का महत्व : देवकीनंदन शर्मा

**पत्रिका न्यूज नेटवर्क**
patrika.com

**सागर.** डॉ. हरि सिंह गौर संगीत विभाग में संगीत चिकित्सा पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है। विषय विशेषज्ञ डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने सुगम संगीत की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। मनोविज्ञान देवकीनंदन शर्मा ने कहा कि तनाव मुक्ति में संगीत का महत्व है। अभ्यास सत्र के अंतर्गत शोध छात्र अखिलेश अहिरवार ने तकनीकों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

दूसरे सत्र के मुख्य वक्ता टीएन साईं राम ने समग्र संगीत चिकित्सा पर व्याख्यान दिया। प्राचार्या रागिनी श्रीवास्तव के सहयोग एवं यश गोपाल श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में संगीत प्रस्तुति हुई। आभार डॉ. राहुल स्वर्णकार ने माना। शैलेंद्र सिंह राजपूत एवं आकाश जैन का कार्यशाला में समन्वयक रहा।

# सीखने के लिए संवाद की संस्कृति आवश्यक है : प्रो. मिनाती पांडा

**आचरण संवाददाता।**
**सागर।** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भाषा नीति और भाषा संबंधी अनुशंसाओं के आलोक में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र और राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं

प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'मध्यप्रदेश की जनजातीय भाषाओं में प्रौढ़ शिक्षा पर इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री का विकास' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला का दूसरा दिन पूर्णरूपेण गतिविधि आधारित और प्रायोगिक रहा। मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय एवं जनजातीय भाषाओं/बोलियों में विषयवस्तु के निर्माण हेतु आपदा प्रबन्धन, विधिक जागरूकता, स्थानीय खेल, स्थानीय संस्कृति, स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, तथा यात्रा एवं सावधानी विषयों के आलोक में व्यक्तिगत गतिविधि के तौर पर सभी प्रतिभागियों द्वारा अपनी-अपनी स्थानीय भाषाओं/बोलियों में कहानियां एवं कविता तैयार की एवं इन विषयों पर आधारित पोस्टर भी बनाया और उनका प्रस्तुतीकरण किया गया। इसके साथ ही साथ कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर की सहायक प्राध्यापक डॉ. सरोज गुप्ता ने 'स्थानीय भाषाओं का महत्व एवं उनका संरक्षण' विषय पर व्याख्यान दिया एवं जवाहरलाल नेहरू विवि, नई दिल्ली की भाषा विज्ञानी प्रो. मिनाती पांडा ने आभासी पटल के माध्यम से आदिवासी भाषाओं में पाठ्य सामग्री तैयार करने की रणनीतियों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि जनजातीय समूहों के पास स्वयं की अपार ज्ञान-सामग्री विद्यमान है, हमें उन्हें साक्षर करते समय उन्हीं के संदर्भों, इतिहास, भूगोल, संस्कृति आदि को आधार बनाना आवश्यक है। समुदाय की भागीदारी के साथ ही व्यक्ति को साक्षर करने की मुहिम प्रारंभ होना चाहिए। कार्यालय के संचालन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली की ज्योति तिवारी एवं टीएलसी समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने किया।

# राष्ट्रीय संगोष्ठी 24 से

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 24 फरवरी से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी होगी। रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उदघाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विवि के कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया मुख्य अतिथि, मुख्य वक्ता प्रो.श्यामसुंदर दुबे होंग। संगोष्ठी की संयोजक भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रो.चंदा बैन एवं डॉ. राजेन्द्र यादव एवं आयोजन सचिव डॉ. आशुतोष हिन्दी विभाग हैं।

ऑनलाइन राय दें

# हिंदी विभाग में रामकाव्य परंपरा और बुंदेलखंड विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आज से

**भास्कर संवाददाता | सागर**

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में 24 एवं 25 फरवरी को दो दिवसीय रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड साहित्य, संस्कृति और इतिहास विषय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। शुक्रवार को उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विवि भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया होंगे। मुख्यवक्ता प्रो श्यामसुंदर दुबे होंगे। दो दिन में चार सत्रों में होने वाली संगोष्ठी में रामकाव्य के उद्भव और विकास, हिन्दी के पूर्व रामकाव्य परम्परा, रामकाव्य परम्परा की पृष्ठभूमि, अपभ्रंश साहित्य में रामकाव्य परम्परा, संस्कृत साहित्य में रामकाव्य परम्परा , बुंदेली में रामकाव्य एवं परम्परा, अवधी में रामकाव्य एवं परम्परा, बृज भाषा में रामकाव्य, खड़ी बोली हिन्दी में रामकाव्य हिन्दी आलोचना और रामकाव्य, आदिकालीन साहित्य में रामकाव्य, भक्तिकालीन साहित्य में रामकाव्य, रीतिकालीन साहित्य में रामकाव्य, बुंदेली लोक संस्कृति में राम, आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य, बुंदेली लोक संस्कृति में राम, आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य, बुंदेलखण्ड का इतिहास और राम, तमिल भाषा में रामकाव्य, बुंदेलखण्ड के भित्ति चित्रों में राम, बुंदेली भाषा में रामकाव्य, लोक जीवन और साहित्य में रामकाव्य हिन्दी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों में रामकाव्य, अन्य भारतीय भाषाओं में रामकाव्य, राम जैसे उप विषयों पर विभिन्न सत्रों में शोध पत्रों का वाचन होगा।

# निरक्षर लोगों को उनकी ही भाषाओं में नव साक्षर भारत अभियान से जोड़ना होगा : डॉ. वर्मा

**भास्कर संवाददाता | सागर**

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र,

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मध्यप्रदेश की जनजातीय भाषाओं में प्रौढ़ शिक्षा पर इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री का विकास विषय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला का गुरुवार को समापन हुआ। समापन सत्र में डॉ. संजय शर्मा ने दुनिया में विलुप्त हो रहीं 200 से अधिक भाषाओं के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें यह समझना होगा कि आखिर मातृभाषाओं, स्थानीय भाषाओं में शिक्षा की बात करने के पीछे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मंतव्य क्या है? ज्योति तिवारी ने कहा कि भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम किसी भी स्थान की संस्कृति को जान सकते हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. मनीष वर्मा ने कहा कि लोकतंत्र में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित हो इसके लिए हमें निरक्षर लोगों को उनकी ही भाषाओं में नव साक्षर भारत अभियान से जोड़ना होगा।

# अपना आंकलन स्वयं करें : प्रो. ओजस प्रताप

**सागर, देशबन्धु।** संगीत विभाग में चल रही कार्यशाला का चतुर्थ दिवस कार्यशाला में मुख्य वक्ता और विषय विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली विवि प्रो. ओजस प्रताप रहे। उन्होंने सत्र प्रारंभ वृंदावनी सारंग में रचित बंदिश झूला डालो अमवा की डारी से किया। पश्चात उन्होंने गुरु के महत्व को समझाया। उन्होंने बताया कि आप अपनी क्षमताओं को समझे और आंकलन स्वयं करें। मानव का चरित्र उसकी कलाओं में दिखाई देता है। मुख्य अतिथि प्रो. नवीन कानगो उपस्थित रहे। आमंत्रित अतिथि सम्मान प्रो. नवीन कानगो एवं डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने किया। डॉ. ललित मोहन अध्यक्ष एवं डीन एआईएस उपस्थित रहे। दूसरे सत्र मैं प्रथम प्रस्तुति आदर्श संगीत महाविद्यालय के नवोदित कलाकारों की रही। आभार व्यक्त डॉ. राहुल स्वर्णकार ने किया।

# रामकाव्य परंपरा और बुंदेलखंड विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 24 एवं 25 को

**सागर, आचरण संवाददाता।**

डॉक्टर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि सागर के हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में 24 एवं 25 फरवरी को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी का विषय है- रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड (साहित्य, संस्कृति और इतिहास). दिनांक 24 फरवरी को संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र होगा जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता करेंगी। मुख्य अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विवि भोपाल के कुलपति प्रो खेमसिंह डहेरिया होंगे। मुख्य वक्ता प्रो श्यामसुंदर दुबे होंगे।स्वागत वक्तव्य विभागाध्यक्ष प्रो आनन्द प्रकाश त्रिपाठी देंगे।

संगोष्ठी संयोजक भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रों.चंदा बैन एवं डॉ. राजेन्द्र यादव एवं आयोजन सचिव डॉ. आशुतोष हिन्दी विभाग हैं। संयोजकद्वय ने बताया कि इस संगोष्ठी मे रामकाव्य-उद्भव और विकास, हिन्दी के पूर्व रामकाव्य परम्परा, रामकाव्य परम्परा की पृष्ठभूमि, अपभ्रंश साहित्य में रामकाव्य परम्परा, संस्कृत साहित्य में रामकाव्य परम्परा, बुन्देली में रामकाव्य एवं परम्परा, अवधी में रामकाव्य एवं परम्परा, बृज भाषा में रामकाव्य, खड़ी बोली हिन्दी में समकाव्य हिन्दी आलोचना और रामकाव्य, आदिकालीन साहित्य में रामकाव्य, भक्तिकालीन साहित्य में रामकाव्य, रीतिकालीन साहित्य में रामकाव्य, बुंदेली लोक संस्कृति में राम, आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य, बुन्देली लोक संस्कृति में राम, आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य ,बुन्देलखण्ड का इतिहास और राम, तमिल भाषा में रामकाव्य, बुन्देलखण्ड के भित्ति चित्रों में राम, बुन्देली भाषा में रामकाव्य, लोक जीवन और साहित्य में रामकाव्य हिन्दी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों में रामकाव्य, अन्य भारतीय भाषाओं में रामकाव्य, राम जैसे उपविषयों पर विभिन्न सत्रों में शोध पत्रों का वाचन होगा। संगोष्ठी दो दिवसों में कुल चार सत्रों में विभाजित है जिसमें रामकाव्य परंपरा और बुंदेलखंड विषय के विविध पक्षों पर ख्यातिनाम विद्वानों के व्याख्यान भी होंगे।

**विवि • रामकाव्य परंपरा और बुंदेलखंड विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन**

# 'राम भारतीय समाज, संस्कृति के मूल आधार हैं'

भास्कर संवाददाता | सागर

लोक और साहित्य के अपने-अपने राम हैं। विभिन्न सत्रों में रामकाव्य परम्परा के विविध विषयों पर जो शोध, आलेख प्रस्तुत हुए और विद्वानों के वक्तव्य दिए। इससे साफ है कि राम भारतीय समाज, भारतीय साहित्य और भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। भारत के विभिन्न अंचलों की लोकसंस्कृतियों के अपने-अपने राम हैं। सम्पूर्ण भारतीय साहित्य, संस्कृति और समाज राम से बहुत गहरे स्तर पर प्रभावित हैं। यह उद्गार प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने व्यक्त किए। वे डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहर लाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में रामकाव्य परम्परा और बुंदेलखण्ड विषय पर चल रही राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि यह अविछिन्न परम्परा वाल्मीकि से लेकर निराला तक स्पष्ट दिखाई देती है। विभिन्न भारतीय भाषाएं भी राम काव्य परम्परा के प्रभाव से अधिक प्रभावित हैं। अतः राम भारत के उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से लेकर पश्चिम तक की सभी संस्कृतियों एवं समाजों और उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के भीतर बसते हैं। निस्संदेह विश्व में भारत की पहचान को राम का चरित्र अधिक व्यापक और अनुकरणीय बनाता है। मुख्यवक्ता साहित्यकार शरद सिंह ने कहा कि राम बुंदेलखण्ड के लोक जीवन में लगातार सुनाई देते हैं। यहां घट-घट में राम हैं। उन्होंनें राम के अयोध्या से ओरछा आगमन की प्रमाणिक कहानी प्रस्तुत की और राम के साथ होली के दृश्य को जीवंत कर दिया। समापन सत्र के प्रारंभ में राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक प्रो. चन्दा बैन ने प्रतिवेदन पढ़ा। इसमें संगोष्ठी की चर्चा और पढ़े गए शोध-आलेखों की समीक्षा की। संगोष्ठी का तृतीय एवं चतुर्थ संयुक्त सत्र रामकाव्य का सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पक्ष और लोक विषय पर केन्द्रित था। इसमें कई शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने अपने-अपने शोधपत्रों में रामकाव्य परम्परा और बुंदेलखण्ड के इतिहास एवं संस्कृति पर विस्तार से प्रकाश डाला। उमरिया से आई डॉ. सत्या सोनी ने कबीर के राम और कबीर में राम, आकांक्षा जैन ने जैन साहित्य में रामकाव्य, ज्योति गिरि ने समकालीन काव्य में राम, हरिओम ने रामकाव्य परम्परा और अवतारवाद, डॉ. सुजाता मिश्रा ने सामाजिक बदलते दौर में रामकाव्य, धर्मेंद्र कुमार भारती दमोह ने सीता-राम संवाद, माधव चंद्रा ने हमारे लोक रामायण में कोविड, सृष्टि सिंह ने रामकाव्य का आध्यात्मिक स्वरूप, दुर्गेश कुमार सजल ने लोक परम्परा में राम, आरती सिंह छतरपुर ने आधुनिक हिन्दी में रामकाव्य परम्परा विषय पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। संचालन डॉ. राजेन्द्र यादव आभार डॉ. आशुतोष मिश्र ने माना।

---

**संगोष्ठी** राम से जुड़ी अनेकानेक बुन्देली रचनाओं का परिचय दिया

# बुन्देली संस्कृति के केन्द्र में हैं राम: नीलिमा

सागर, आचरण संवाददाता।

जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड : साहित्य, संस्कृति और इतिहास'' का कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. खेमसिंह डेहरिया के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ट साहित्यकार और संस्कृति चिंतक प्रो. श्यामसुन्दर दुबे थे। बुन्देली संस्कृति के केन्द्र में राम बसते हैं। बुन्देली लोक के कण-कण में राम ध्वनित होते हैं। जीवन के आदि से अंत तक सफर राममय है। राम के जीवन पर शोध और अध्ययन की अनंत सम्भावनाएँ हैं। बशर्ते हम उनको उस दृष्टिकोण से देखें, जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलू शामिल हों। यह विचार अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने व्यक्त किये। बुंदेली लोक संस्कृति के वरिष्ठ साहित्यकार और चिंतक प्रो. श्यामसुन्दर दुबे ने बुन्देली, अवधी, बघेली, भोजपुरी के लोक जीवन और संस्कृति में अपनी-अपनी क्षेत्रीय रामकथाओं का उल्लेख किया और उन्होंने इस बात पर दिया कि मातृभाषाओं में ही राम के चरित्र को सबसे पहला विस्तार प्राप्त होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि अटल विहारी वाजपेयी हिन्दी विवि, भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डेहरिया ने बुन्देलखण्ड अंचल में रामकथाओं की परम्परा को विस्तार से प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने अनेक ऐसी रामकथाओं के प्रमाण दिये, जिनके बारे में, अकादमिक जगत अनभिग्य था। तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' एवं महाकवि केशवंदास कृत 'रामचन्द्रिका' के पूर्व उन्होंने ग्वालियर में जन्में विष्णुदास कृत 'रामायण कथा' का उल्लेख किया। साथ ही राम से जुड़ी अनेकानेक बुन्देली रचनाओं का परिचय दिया। संगोष्ठी के प्रारम्भ में हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय संगोष्ठी की मुख्य संयोजक एवं भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता एवं विवि की प्रॉक्टर प्रो. चन्दा बैन ने राष्ट्रीय संगोष्ठी 'रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड : साहित्य, संस्कृति और इतिहास' का आरम्भिक विषय प्रवर्तन किया, उन्होंने केशवदास कृत 'रामचन्द्रिका' के अंगद-रावण संवाद सहित अनेक उद्धरणों के माध्यम से विषय प्रवर्तन किया।

संगोष्ठी में इस अवसर पर प्रो. ए.डी. शर्मा, प्रो. पदीप कठल, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. श्रीभागवत, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. बी.आइ. गुरू, प्रो. नरेन्द्र सिंह, प्रो. सरोज गुप्ता, डॉ. सुश्री शरद सिंह, डॉ. कालीनाथ झा, डा. रश्मि सिंह, डॉ. टीकाराम त्रिपाठी रूद्र, उमाकांत मिश्र, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. हिमांशु कुमार, डॉ. अफरोज बेगम, डॉ. किरण आर्या, डॉ. शशिकुमार सिंह, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ. सुजाता मिश्र, प्रदीप कुमार एवं डॉ. अवधेश कुमार के साथ हिन्दी विभाग के शोधछात्रों में विशेष रूप से ज्योति गिरि, आकांक्षा जैन, शैलेन्द्र यादव, सृष्टि सिंह, कृति कुमारी, हरिओम, सूर्यकांत, पंकज, रामधीरज, हरीशंकर, गब्बर, गोविन्द एवं विभिन्न प्रदेशों से आये शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे। उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी का संचालन डॉ. आशुतोष मिश्र एवं आभार डॉ. राजेन्द्र यादव ने व्यक्त किया।

---

# प्रो. नीलिमा गवर्निंग काउंसिल की सदस्य नामित

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) के गवर्निंग काउंसिल के सदस्य के रूप में नामित किया गया है। प्रो. गुप्ता वर्ष 2023 से 2025 तक एआईयू के गवर्निंग काउंसिल सदस्य के रूप में सक्रिय भागीदारी एवं दिशा-निर्देशन प्रदान करेंगी।

गौरतलब है कि भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित भारतीय विश्वविद्यालय संघ में देश एवं विदेश के 500 से अधिक विश्वविद्यालय शामिल हैं। संघ के माध्यम से सदस्य संस्थाओं के बीच अकादमिक साझेदारी, युवा मामले, खेल गतिविधियां, दस्तावेजीकरण, उन्मुखीकरण कार्यक्रम, शोध, प्रशिक्षण एवं कार्यशाला सहित अनेक शैक्षणिक-सहशैक्षणिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के सदस्य के रूप में शामिल किए जाने पर विवि परिवार हर्षित और गौरवान्वित है।

# बुन्देली संस्कृति के केन्द्र में हैं राम : प्रो. गुप्ता

सागर, देशबन्धु। जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी रामकाव्य परम्परा और बुन्देलखण्ड: साहित्य, संस्कृति और इतिहास का कुलपति

प्रो.नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.खेमसिंह डेहरिया के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार और संस्कृति चिंतक प्रो.श्यामसुन्दर दुबे थे। कुलपति प्रो.गुप्ता ने कहा कि बुन्देली संस्कृति के केन्द्र में राम बसते हैं। बुन्देली लोक के कण-कण में राम ध्वनित होते हैं। जीवन के आदि से अंत तक सफर राममय है। राम के जीवन पर शोध और अध्ययन की अनंत सम्भावनाएं हैं। बशर्ते हम उनको उस दृष्टिकोण से देखें जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलू शामिल हों। प्रो.श्यामसुन्दर दुबे ने बुन्देली, अवधी, बघेली, भोजपुरी के लोक जीवन और संस्कृति में अपनी-अपनी क्षेत्रीय रामकथाओं का उल्लेख किया और इस बात पर दिया कि मातृभाषाओं में ही राम के चरित्र को सबसे पहला विस्तार प्राप्त होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो. खेमसिंह डेहरिया ने बुन्देलखण्ड अंचल में रामकथाओं की परम्परा को विस्तार से प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने अनेक ऐसी रामकथाओं के प्रमाण दिये जिनके बारे में अकादमिक जगत अनभिज्ञ था। संगोष्ठी के प्रारम्भ में हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो.आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय संगोष्ठी की मुख्य संयोजक एवं भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता एवं विश्वविद्यालय की प्रॉक्टर प्रो.चन्दा बैन ने विषय प्रवर्तन किया।

## संगीत चिकित्सा पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय संगीत विभाग में आयोजित संगीत चिकित्सा पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला का चतुर्थ दिवस रहाद्य कार्यशाला का प्रारंभ सरस्वती वंदना से हुआ, विभागीय छात्राओं के द्वारा सस्वर वंदना प्रस्तुत की गई। तबला पर संगत आकाश जैन एवं हार्मोनियम पर संगत अतुल पथरोल ने की। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. ओजस प्रताप सिंह रहे। प्रो ओजस ने कलाओ मे अभ्यास और साधना के महत्व को बताया। उन्होंने बताया कि संगीत साधक में धेर्य एवं एकाग्रता होनी चाहिए। अभ्यास सत्र में स्वर लगाव की विशेष प्रक्रिया, अभ्यास की विभिन्न विधियां साथ ही राग भैरव मैं विशेष बंदिशों का ज्ञान प्रतिभागियों को दिया। अंत में राग भैरवी से प्रो. ओजस ने सत्र का समापन किया तबले पर संगत शैलेन्द्र सिंह राजपूत ने की। दितीय सत्र में मुख्य वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में मनोविज्ञान विभाग के डॉ. ज्ञनेश तिवारी एवं दुगेश उपाध्याय रहे। दोनों ही वक्ताओ ने संगीत चिकित्सा सहित संगीत और मनोविज्ञान के संबंध को स्पष्ट किया।

## राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की

सागर, आचरण संवाददाता।

संगीत विभाग डॉ हरिसिंह गौर विवि में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का छठवां दिवस हाइब्रिड मोड में संपन्न हुआ। प्रथम सत्र में प्रथम वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर रहे उन्होंने संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली एवं नई शिक्षा नीति में संगीत विषय पर अपना व्याख्यान दिया । प्रथम सत्र में द्वितीय वक्ता के रूप में वाराणसी से पधारे हुए डॉ दुर्गेश उपाध्याय जी रहे उन्होंने लगभग 2 घंटे से अधिक का सारगर्भित व्याख्यान दिया द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ अनूप मोंघे रहे। उन्होंने बन्दिशों के माध्यम से रागों का परिचय दिया और राग, ताल और संगीत संबंधी ज्ञांन को सरल और सांगीतिक तरीके से याद रखने के ढंग बताये। भोपाल से ऑनलाइन उपस्थित श्री दिलीप माने ने संगीत चिकित्सा पर अपने व्यक्तिगत प्रयोगों को बताया। संध्यकालीन सत्र में प्रस्तुतियों के क्रम में प्रथम प्रस्तुति कार्यशाला के प्रतिभागियों एवं शहर के विभिन्न संगीत संस्थाओं से पधारे विद्यार्थियों ने श्री यश गोपाल श्रीवास्तव निर्देशन में सामूहिक प्रस्तुति दी। उन्होंने राग देश में छोटा ख्याल एवं चतुरंग की प्रस्तुति दी। द्वितीय प्रस्तुति वंशिका व्यास की रही उन्होंने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात कुमारी हितांशी पमनानी ने कव्वाली गायन की प्रस्तुति दी। शास्त्रीय गायन के अंतर्गत निखिल सोनी ने राग मारू बिहाग में विलंबित ख्याल एवं द्रुत खयाल की प्रस्तुति दी। तबला पर संगत शैलेंद्र सिंह राजपूत एवं हारमोनियम पर संगत कौशल मेहरा ने की। डॉ ललित मोहन का मार्गदर्शन में कार्यशाला का संयोजन डॉ तोमर ने किया एवं आयोजन सचिव डॉ राहुल स्वर्णकार रहे। आशी श्रीवास्तव मंच संचालन ने किया एवं आभार व्यक्त आकाश जैन ने किया।

# संगीत की राष्ट्रीय कार्यशाला में दिया रागों का परिचय

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का छठवे दिन वक्ताओं ने बंदिशों के माध्यम से रागों का परिचय दिया।

प्रथम वक्ता डा अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली एवं नई शिक्षा नीति में संगीत विषय पर अपना व्याख्यान दिया। वाराणसी से पधारे हुए डा दुर्गेश उपाध्याय, डा अनूप मोघे ने बन्दिशों के माध्यम से रागों का परिचय दिया और राग, ताल और संगीत संबंधी ज्ञान को सरल और सांगीतिक तरीके से याद रखने के ढंग बताये।

भोपाल से आनलाइन उपस्थित दिलीप माने ने संगीत चिकित्सा पर अपने व्यक्तिगत प्रयोगों को बताया। सांध्यकालीन सत्र में प्रस्तुतियों के क्रम में प्रथम प्रस्तुति कार्यशाला के प्रतिभागियों एवं शहर के विभिन्न संगीत संस्थाओं से पधारे विद्यार्थियों ने सामूहिक दी। उन्होंने राग देश में छोटा ख्याल एवं चतुरंग की प्रस्तुति दी। वंशिका व्यास ने गीत प्रस्तुत किया। हितांशी पमनानी ने कव्वाली की प्रस्तुति दी।

शास्त्रीय गायन के अंतर्गत निखिल सोनी ने राग मारू बिहाग में विलंबित ख्याल एवं द्रुत खयाल की प्रस्तुति दी। तबला पर संगत शैलेंद्र सिंह राजपूत एवं हारमोनियम पर संगत कौशल मेहरा ने की। कार्यशाला में डा ललित मोहन, डा राहुल स्वर्णकार, आशी श्रीवास्तव, आकाश जैन ने भी अपनी बात रखी।

# विवि में बायो गैस प्लांट की स्थापना हेतु समिति गठित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से विश्वविद्यालय में बायो गैस प्लांट महात्मा गांधी नरेगा के तहत स्थापित करने के लिए एक समिति का गठन किया गया है। यह समिति कार्यालयीन आदेश 1 मार्च 2023 से आगामी आदेश तक कार्य करेगी। समिति का अध्यक्ष प्रो.अशोक कुमार अहिरवार को नियुक्त किया गया है। वहीं सदस्य के रूप में वाणिज्य विभाग के प्रो.डीके नेमा, रसायन विज्ञान विभाग के सहायक प्रो.डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. अभिषेक जैन, सदस्य सचिव डॉ. पंकज तिवारी। यह समिति विवि अतिथि गृह परिसर में बायो गैस प्लांट की स्थापना के लिए आवश्यक कदम उठाएगी।

# विवि: प्रो. अस्मिता गजभिए योग केंद्र की समन्वयक बनी

सागर| डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग की प्रो. अस्मिता गजभिए को उनके वर्तमान दायित्वों के अतिरिक्त योग केंद्र का समन्वयक नियुक्त किया गया है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रो. गजभिए की यह नियुक्ति अगले आदेश तक के लिए की है। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने इस संबंध में आदेश जारी किया है।

# डॉ गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संस्मरण के लिए जानकारों की खोज

नरसिंहपुर।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर स्थित गौर पीठ के तत्वावधान में विभिन्न गतिविधियों के संचालन हेतु ठोस कार्ययोजना को आधार बनाने हेतु विस्तृत विमर्श किया गया।

डॉ गौर की आवाज और वीडियोज को प्राप्त करना, डॉ गौर के स्मृति ग्रंथ का पुनर्प्रकाशन, डॉ गौर के सूक्त वाक्यों को विभिन्न विभागों में डिस्प्ले करना, डॉ गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संस्मरण के लिए व्यक्तियों की खोज और जानकारी जुटाना, भारत रत्न के लिए प्रयास, देश-विदेश में डॉ हरीसिंह गौर की स्मृति में कार्यक्रमों का आयोजन, डॉ गौर पर केन्द्रित व्याख्यान मालाओं का आयोजन, डॉक्यूमेंटरीज का निर्माण आदि प्रमुख हैं। गौर पीठ समन्वयक प्रो दिवाकर सिंह राजपूत ने बतलाया कि डॉ गौर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर वर्गीकरण करते हुए कार्ययोजनाओं को आकार दिया जाना है। जैसे डॉ गौर समाज सुधारक के रूप में, विधि विशेषज्ञ, शिक्षा विद्, दार्शनिक, चिंतक, लेखक, प्रखर वक्ता, देश प्रेमी, भारतीय विचारक, संविधान सभा के सदस्य आदि स्वरूप में व्याख्यान और शोध को आधार देना है।

बैठक में प्रो दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो सुरेश आचार्य, डॉ प्रदीप चौहान, डॉ ललित मोहन, डॉ पंकज तिवारी, डॉ रितु यादव, डॉ ज्योति चौहान, डॉ राकेश शर्मा, डॉ संदीप रावत उपस्थित रहे।

# विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस में होगी बायो गैस प्लांट की स्थापना

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में बायोगैस प्लांट लगेगा। इससे गीले कचरे का तो निस्तारण होगा ही, रोजाना 450 लीटर गैस भी पैदा होगी। हालांकि बायो गैस प्लांट की क्षमता क्या रहेगी और यह कब तक स्थापित होगा, इसका निर्णय समिति करेगी। समिति का गठन कर दिया गया है। बताया गया है कि विश्वविद्यालय में ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से बायोगैस प्लांट महात्मा गांधी नरेगा के तहत स्थापित किया जाएगा। इसी के लिए समिति का गठन किया गया है। यह समिति 1 मार्च से कार्य करेगी। समिति का अध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार अहिरवार को नियुक्त किया गया है। जबकि सदस्य प्रो. डीके नेमा, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. अभिषेक जैन, सदस्य सचिव डॉ. पंकज तिवारी को बनाया गया है। अध्यक्ष प्रो. अहिरवार ने बताया कि हम जल्दी ही समिति की बैठक करेंगे। जिसमें अतिथि गृह परिसर में बायो गैस प्लांट की स्थापना पर चर्चा कर निर्णय लिए जाएंगे।